आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012–2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां | अंक : छठा | अक्टूबर–2013

सवाल–जवाब 4

(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)

विरोध 21

(मीरां बाई की बानी)

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
पोटर वेली, केलीफोर्निया

संपादक - **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
मो. 099 50 55 66 71 (राजस्थान)
मो. 098 71 50 19 99 (दिल्ली)
उपसंपादक - **नन्दनी / माया रानी**
विशेष सलाहकार - **गुरमेल सिंह नौरिया**
मो. 099 28 92 53 04
अनुवादक - **मास्टर प्रताप सिंह**
संपादकीय सहयोगी - **रेनू सचदेवा, सुमन आनन्द व परमजीत सिंह**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अक्टूबर 2013 –139– मूल्य – पाँच रुपये

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *महाराज जी! मेरे पहले जीवन में काफी परेशानियाँ और तकलीफें रही हैं जिन्हें मैं भूल नहीं पाई हूँ। जिस व्यक्ति ने ये परेशानियाँ पैदा की थी मैं कोशिश करके भी उसे क्षमा करने में कामयाब नहीं हुई। आप इस बारे में मुझे कुछ बताएंगे कि मैं किस तरह उन व्यक्तियों को भूल सकूँ और क्षमा कर सकूँ?*

बाबाजी: सभी सन्तों ने इस दुनिया को *परेशानियों का घर, परेशानियों का देश* कहा है। यहाँ एक परेशानी के पीछे दूसरी परेशानी जन्म लेती है। यहाँ अन्धा ही अन्धे का आगू है; यह घोर अंधेरे वाली नगरी है। उच्चकोटि के महात्मा सदा दया और प्यार लेकर इस संसार में आते रहे लेकिन हम दुनियादार जीव उनके लिए परेशानियाँ खड़ी करते रहे।

हमने इस संसार में रहते हुए बहुत बारीकी से सोचना है कि जिस व्यक्ति ने हमारे लिए परेशानियाँ पैदा की हैं क्या हमने कभी उसके बारे में अच्छे ख्याल रखे, क्या हमने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया? आमतौर पर देखा जाता है कि मन अपने ऊपर इल्ज़ाम नहीं लेता दूसरों से कहता है कि तुमने मुझे परेशानियाँ दी हैं लेकिन हम कभी अपनी पड़ताल नहीं करते।

सन्त संसार में दया का अंग लेकर आते हैं वे तो दया करना ही जानते हैं, दया ही उनका स्वभाव होता है उन्हें दया विरासत में मिली होती है। परमात्मा ने सन्तों को माफी का खजाना देकर भेजा होता है। लोगों ने सभी महात्माओं की बहुत बुरी हालत की, जैसे क्राईस्ट को सूली पर चढ़ाया, मन्सूर की पत्थर मारकर मौत

की गई गुरु नानकदेव जी को कुराहिया और कमला कहा गया, गुरु अर्जुनदेव जी को गैर मनुखी तसीहे देकर शहीद किया।

यह सब कुछ धर्म के ठेकेदारों ने धर्म के नाम पर ही किया लेकिन महात्माओं ने फिर भी प्रभु के आगे फरियाद की कि हे परमात्मा! तू इन्हें माफ कर दे ये लोग नहीं जानते कि ये अपना कितना बुरा कर्म बना रहे हैं।

महात्मा तो जान लेने वालों को भी माफ कर देते हैं क्योंकि परमात्मा ने उन्हें माफी का खजाना देकर भेजा होता है इसलिए वह हमें बदला लेने की सलाह कैसे दे सकते हैं? महाराज कृपाल कहा करते थे, ''यह काल की नगरी हैं। काल के राज्य में बदला लिया जाता है, आँख के बदले आँख ली जाती है, जो कसूर करता है वह सजा पाता है लेकिन दयाल के राज्य में माफी है। सतसंगी के लिए यही बेहतर है कि वह इस अंग को हमेशा पास रखें।''

एक प्रेमी: *महाराज जी! मैंने आपका वह लेख पढ़ा है जिसमे आपने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के बारे में बताया है। यह लेख पढ़कर मुझे बहुत अफसोस और दुख हुआ। जब मैं यहाँ से वापिस अपने घर जाऊंगा तो मुझ पर हमला करने वाले काम और क्रोध के डाकु मुझ पर हमला करेंगे अगर उस समय में आपके बारे में सोचूँ कि आप हमारे प्रति बहुत खूबसूरत और मधुर हैं और मैं काम और क्रोध को एक तरफ करने की कोशिश करूँ तो यह ऐसा नहीं होगा कि मैंने अपनी रस्सी आपके गले में डाल दी, क्या यह आपके ऊपर बोझ नहीं होगा? मैं चाहता हूँ कि आप इस बारे में कुछ बताएं?*

बाबाजी: मुझे खुशी है कि आपने उस लेख को अच्छी तरह विचारा है। मैं सदा ही सन्तबानी मैगजीन पढ़ने की सलाह दिया

करता हूँ। उसमें प्रेमियों के सवाल-जवाब होते हैं जो हर एक के फायदे के लिए होते हैं। इन्हें पढ़ने से हमें काफी मदद मिलती है।

हर सतसंगी को चाहिए कि वह अपने मन को पाँच डाकुओं के बारे में बता दे। काम बेइज्जती का कारण बनता है, इंसान को जानवर बना देता है। कामी आदमी को पास खड़ा इंसान भी दिखाई नहीं देता कि मुझे कोई देख रहा है। काम हमें नर्कों में ले जाता है, कामी आदमी 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं कर सकता उसे शब्द का रस नहीं आता बेशक वह दुगना समय भजन में लगाए। काम ऐसी अग्नि है इस पर जितनी लकड़ियाँ डालें यह उतना ही ज्यादा भांबड़ मचाती है। मन को काम के नुकसान बताते रहना चाहिए।

सतसंगी को मन के साथ संघर्ष करना चाहिए। सतगुरु ने हमें शब्द धुन से लेस किया है। हमें पाँच पवित्र नाम नहीं भूलने चाहिए और साथ-साथ इनका सिमरन भी करते रहना चाहिए। सिमरन से हमें मदद मिलती है। जब मन आपके अंदर काम का ख्याल पैदा करता है तो आप उस तरफ तवज्जो न दें। गुरु के दिए हुए नाम की तरफ तवज्जों दें तो सतसंगी को अवश्य ही मदद मिलती है।

सिपाही फ्रन्ट पर जाता है कभी दुश्मन का जोर पड़ जाता है अगर सिपाही दुश्मन के आगे हथियार फैंक दे तो क्या वह कामयाब हो जाएगा? अगर सिपाही कायर बनकर भागेगा तो क्या वह अपने मालिक का नमक हलाल कर सकेगा? इसी तरह सतसंगी को भी एक सिपाही की तरह मन के आगे मजबूत होकर सिमरन करना चाहिए, हार नहीं माननी चाहिए।

मन के हमले से पहले ही हमें सिमरन का धावा बोल देना चाहिए। जब काम हमारे ऊपर हमला करता है तो हमारे ख्यालों में आता है हम उन ख्यालों को अपने अंदर जगह दे देते हैं तो मन

हमारे ऊपर हमला कर देता हैं फिर हम शरीर से उस काम की भूख को मिटाते हैं। काम भोगों में फँसकर हम रुहानियत में दिवालीए हो जाते हैं, रुहानियत में तरक्की नहीं कर सकते। यह हमें ऐसे गहरे खड्डे में गिरा देता हैं जहाँ से हम निकल नहीं सकते। सारी जिंदगी दिमाग को ऐसी बदबू चढ़ी रहती है कि इंसान के दिमाग से ये ख्याल नहीं निकलते। गुरु अर्जुनदेव जी समझाते हैंः

हे कामी नरक बिसरामी बोह जूनी भरमावे।

हे काम! तू हमें ऊँची-नीची योनियों में ले जाता है और हमारे जप-तप को छीन लेता है। गुरु अर्जुनदेव जी यह भी कहते हैंः

निमख स्वाद कारण, कोट दिनस दुख पावे।
घड़ी मोहित रंग माणें रलिया, बोहर-बोहर पछतावे।।

अगर हम मन को यह बता दें कि तुझे थोड़े से सुख के लिए करोड़ दिन कष्ट भोगने पड़ेंगे। एक करोड़ दिन के तैंतीस हजार साल बनते हैं अगर मन को यह घाटा बता दें तो शायद यह मन तौबा कर देगा! इस तरफ नहीं जाएगा।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैंने अपनी बाहें ऊपर करके गुरु के आगे पुकार की कि मुझे बचा ले ये दुश्मन मुझे घेरते हैं, मुझे मेरे गुरु ने बचा लिया।'' अगर हम सच्चे दिल से फरियाद करते हैं तो गुरु मदद के लिए जरूर पहुँचता है। हमने अंदर ख्यालों को जगह दी होती है, ऊपर से सिमरन का ढ़ोंग रचाकर बैठे होते हैं अगर हम अंदर-बाहर से सच्चे हैं तो हमारी पुकार जरूर सुनी जाती है।

हम गुरु को दुनियावी झगड़ों के पत्र लिखते हैं या इंटरव्यू में भी दुनियावी बातें करते हैं जिसका गुरु के ऊपर बोझ पड़ता है। सन्तों का हमारी दुनियावी जिंदगी से कोई लेखा-जोखा नहीं होता। सन्त हमें सतसंग में भी यही समझाते हैं कि हम जिंदगी में जितने

भी काम शान्त मन और विवेक बुद्धि से करेंगे उतना ही हम शान्त जिंदगी बिता सकेंगे और ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन कर सकेंगे।

अगर हम इन पाँच डाकुओं से बचने के लिए फरियाद करते हैं तो समझ लें कि हम ऊँचे भाग्यवाले हैं। सन्त चाहते हैं कि हमारे बच्चे इनसे बचें। वे एक धोबी की तरह होते हैं, मैले से मैले जीव की भी मदद करने के लिए तैयार रहते हैं।

पति-पत्नी के लिए प्यार से जिन्दगी बितानी उनकी खुद की ड्यूटी है। पत्नी पत्र लिखती है तो वह पति में सारी कमियाँ निकालकर रख देती है अगर पति पत्र लिखता है तो वह पत्नी में सारी कमियाँ निकालकर रख देता है। सोचकर देखें! जब महात्मा इस तरह का पत्र पढ़ेगा तो उसके दिल पर क्या बीतेगी? मियाँ-बीवी को ऐसी परेशानियाँ घर में बैठकर ही सुलझा लेनी चाहिए। सन्त किसी को यह नहीं कह सकते कि तुम अलग-अलग हो जाओ। वे अलग-अलग करने के लिए सोच भी नहीं सकते। हम लोग सन्तों के पास जाकर कितनी फालतू बातें करते हैं जिनका रुहानियत से कोई मतलब नहीं होता। गुरु हमें संसार में इन पाँच डाकुओं से मुकाबला करवाने के लिए आते हैं अगर कोई सच्चे दिल से मुकाबला करता है तो गुरु जरूर मदद करता है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैंः

सवा लाख से एक लड़ाऊँ, तब ही गोबिंद सिंह नाम कहाऊँ।

इन्द्रियों को रोकना कोई खाला जी का बाड़ा नहीं। हमारे धर्म-ग्रन्थों में आता है कि एक इन्द्री की ताकत दस हजार हाथी की ताकत के बराबर होती है। मन की ताकत पच्चीस हजार हाथी की ताकत के बराबर होती है। एक हाथी को रोकना भी इंसान के लिए मुश्किल होता है। गुरु आत्मा का मुकाबला करवाने के लिए ही संसार में आता है। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैंः

चिड़ियों से मैं बाज लड़ाऊँ तो ही गोबिंद सिंह नाम कहाऊँ ।

आप कहते हैं कि हमारी आत्मा चिड़िया है और मन बाज़ है। मैं इसे आत्मा के बस में कर दूँगा तो ही गुरु कहलवाऊँगा।

मेरे गुरु कुलमालिक महाराज कृपाल सिंह जी जिस समय मुझे अंदर बिठाने लगे तब आपने मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''आँखें अंदर खोलनी है बाहर नहीं खोलनी।'' मैं सच कहता हूँ कि मैं अंदर से एक यतीम की तरह रोया और बाहर से भी आँसू बहाए लेकिन बाहर के पानी से अंदर वाला पानी बहुत कीमती था। मैंने महाराज जी से कहा, ''आपने मेरी लाज रखनी है यह काल का राज्य है। काल मेरे पीछे पड़ा हुआ है, मेरी लाज आपके हाथ में है।'' यह आपकी दया थी जिसने मुझे बचाकर रखा। मुझे आपकी दया बचपन से ही मिलती रही आपने जिसे बचाना होता है उसके अंदर पहले दिन से ही प्रभु का प्यार जाग जाता है।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो-शब्द' का भेद मिला था। आपने मेरी जिन्दगी की मजबूत नींव डाली। मैं उस समय जवान अवस्था में था। आपने मुझसे कहा, ''देख बेटा! अगर तू कोई बुराई करेगा, शराब पिएगा या भोगों में फँसेगा तो लोग मुझे बुरा कहेंगे कि यह उसका चेला है; यह मुझसे सहन नहीं होगा हो सकता है मैं उस समय आत्मघात भी कर लूँ! तू सदा याद रखना जिस तरह सेवक की लाज गुरु के हाथ में होती है उसी तरह गुरु की लाज भी सेवक के हाथ में होती है।''

बाबा बिशनदास जी ने मेरे अलावा किसी और को 'नाम' नहीं दिया था। आप बहुत सख्त स्वभाव के महात्मा थे। मैं बहुत ऊँची-नीची जगह पर गया लेकिन मैंने आपके इस वचन को सदा पल्ले बाँधकर रखा।

मैं जब मालिक की खोज में घर से निकला तो मेरी माता ने कहा, ''देख बेटा! किसी का कपड़ा मत पहनना और किसी से माँगकर मत खाना इससे हमारी बेईज्जती होगी। जब तेरे पास पैसे खत्म हो जाएं तो तू घर आकर पैसे ले सकता है हम तुझे मना नहीं करेंगे, हम तेरे प्यार और लग्न को समझते हैं।''

अगर आज भी मुझे कोई मजबूर करता है तो मैं अपनी माता का वचन दोहराता हूँ। मेरी माता ने यह भी कहा था कि अगर कोई मजबूर करे तो उसे उस चीज़ का अफजाना किसी भी बहाने से दे देना है, उसका दिल भी नहीं तोड़ना। मैं कई जगह गया लेकिन मैंने इन वचनों की पालना हर जगह की। कबीर साहब कहते हैंः

माड़ा कुत्ता खसमे गाली।

प्यारेयो! मैं बताया करता हूँ कि शिष्य से ही गुरु का पता चलता है। गुरु के जितने अच्छे शिष्य होंगे उतना ही गुरु का ज्यादा मान होगा। गुरु जितने शिष्यों को मालिक के आगे दरगाह में लेकर जाएगा वह उतना ही अपने आपको भाग्यशाली समझेगा।

बाबा बिशनदास ने कहा था, ''सदा खेती करके अपना निर्वाह करना, आलसी नहीं बनना।'' मैंने जब पंजाब छोड़ा यहाँ आकर जमीन खरीद ली। उस समय इसे बीकानेर का इलाका कहते थे। यहाँ आकर मैंने अपने हाथों से किरत की और किरत करते हुए कभी भी शर्म महसूस नहीं की।

प्यारेयो! आप अपने मन को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के नुकसान बताएं। *क्रोध* एक बहुत बुरी आग है जिसके घर में यह आग लग जाती है उस घर को भस्म कर देती है। क्रोध अच्छे गुणों को राख बना देता है। *लोभ* इंसान को एक माँस के

लोथड़े की तरह बना देता है। लोभी का बेटे, बेटी से भी प्यार नहीं होता। वह अपनी तृष्णा पूरी करने में लगा रहता है। लोभी आदमी परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकता।

मोह की भी यही हालत है। मोह हमें बार-बार इस संसार में खींचकर लाता है, मोह हमारा बहुत बड़ा जानी दुश्मन है। *अहंकार* की भी ऐसी ही हालत है। अहंकार की उम्र बहुत बड़ी होती है। अहंकार सब इन्द्रियों के बाद हार मानता है। सन्तों ने इन पाँचों से बचने की दवाई 'शब्द-नाम' की कमाई बताई है। अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करेंगे तो हमारी आत्मा में इनसे मुकाबला करने की ताकत आ जाएगी, आत्मा चिड़िया से बाज हो जाएगी।

महाराज सावन सिंह जी हम दुनियादारों की दुर्दशा और हालत बताया करते थे, ''हम लोग जहर भी खाते रहते हैं और हाय! हाय! भी करते रहते हैं।''

कबीर साहब कहते हैं, ''जब इंसान हाथ में दीपक लेकर कुएँ में गिरता है तो उसे कौन बचा सकता है?'' इसलिए हमें ईमानदारी से गुरु के बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए अगर हम ईमानदारी से भजन-सिमरन करते हैं डायरी रखते हैं तो गुरु अपनी ड्यूटी जरूर करता है। वह कभी अपनी ड्यूटी से कोताही नहीं करता।

एक प्रेमी: *महाराज जी! शारीरिक चोला छोड़ने के बाद रुहानी तरक्की करने में ज्यादा समय क्यों लगता है?*

बाबाजी: सच्चाई तो यह है कि आप लागों को पता नहीं कि अंदर के मण्डलों में ज्यादा समय लगता है या नहीं। मैं कई बार बताया करता हूँ कि यह हमारे प्यार के ऊपर निर्भर करता है, कई ऐसे कारण होते है जिससे हम संसार मण्डल पर अभ्यास नहीं कर

सकते लेकिन हमारे अंदर सच्ची तड़प और विरह होती है। ऐसी आत्माओं को अंदर तरक्की करने में देर नहीं लगती क्योंकि अंदर संसारी बंधन नहीं होते; यह हमारे प्यार पर ही निर्भर होता है।

प्यारेयो! यह कोई सरकारी सर्विस नहीं, मिलिट्री की सर्विस नहीं कि इसमें कोई लिहाज रखा जाए। यह हमारे प्यार और तड़प पर निर्भर है। प्रेमी आत्मा का गुरु के पास जाना इस तरह है जैसे खुश्क बारूद को अग्नि के नजदीक कर दें। किसी का कोई समय निश्चित नहीं होता कि हम इतने समय में यह मण्डल पार कर सकते हैं। सुरत-शब्द का हवाई जहाज बहुत तेज होता है। यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम इसे कितना तेज चलाते हैं। हमारी तड़प जितनी ज्यादा होगी गुरु उतनी ही जल्दी हमें 'शब्द-नाम' के जहाज पर बिठाकर अंदर ले जाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे जैसे गोली लग पहले जाती है उसकी आवाज बाद में आती है। इसी तरह जब हम अभ्यास में महारत पैदा कर लेते हैं तो सुरत की चढ़ाई जल्दी हो जाती है। यह हमारे सोचने पर निर्भर है कि हमने कितना समय लगाना है।

प्यारेयो! गुरु गोबिंद सिंह जी की यह कहानी महाराज सावन और महाराज कृपाल ने अपने सतसंगों में कई बार सुनाई है। मैंने भी आपको यह कहानी पहले कई बार सुनाई है कि गुरु गोबिंद सिंह जी के समय में उनके पास ऐसे कई नामलेवा भी थे जिन्हें गुरु नानकदेव जी से या गुरु अंगददेव जी से या गुरु अमरदेव जी से नामदान मिला था। यह उन प्रेमियों की लापरवाही थी कि उन्होंने इन गुरुओं के पास रहकर भी 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं की और आलस में रहे।

उस समय एक प्रेमी आत्मा भाई बेला गुरु गोबिंद सिंह जी के पास आया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उससे पूछा, ''तू कितना पढ़ा-लिखा है, क्या कारोबार करना जानता है?'' भाई बेला ने कहा, ''मैं एक जमींदार हूँ पढ़ा-लिखा तो नहीं लेकिन मैं घोड़ों की सेवा बहुत दिल लगाकर कर सकता हूँ। मैं आपके घोड़े जल्दी तैयार कर दूँगा।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''हमें ऐसे ही आदमी की जरूरत है, तू हमसे रोज एक तुक ले लिया कर और घोड़ों की सेवा भी करते रहना।'' वह एक प्रेमी आत्मा थी। वह रोज समय के अनुसार अपनी तुक ले लिया करता था।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने जुल्म की खातिर जिंदगी में काफी संघर्ष किया, जालिमों के साथ काफी लड़ाईयाँ लड़ी। एक दिन गुरु साहब मुकाबले पर बाहर जा रहे थे। भाई बेला ने सोचा! कहीं गुरु साहब जल्दी न चलें जाए उसने गुरु साहब से कहा, ''महाराज जी! मुझे मेरी तुक बता जाएं।'' आप जानते हैं जब आदमी दुश्मन के साथ लड़ने जा रहा हो उस समय वह पढ़-पढ़ाई की तो सोच ही नहीं सकता। गुरु साहब उसके दृढ़ विश्वास पर बहुत खुश हुए कि इसे अपनी तुक से मतलब है। गुरु साहब ने कहाः

वाह भाई बेला न पछाणें वक्त, ते न पछाणें वेला।

भाई बेला ने इस तुक को मजाक नहीं समझा। वह इस तुक को हदीश समझकर, परमात्मा के मुँह से निकली हुई वाणी समझकर सारा दिन रटता रहा। पुराने सतसंगी जो गुरु साहब के पास रहते थे, पढ़े-लिखे थे वे लोग भाई बेला का मजाक करने लगे कि गुरु साहब तो पीछा छुड़वाने की खातिर इसे यह तुक बोलकर गए हैं लेकिन यह पागल उसी को रट रहा है।

आप जानते हैं कि ओछे आदमी बड़ी जल्दी एक-दूसरे की शिकायत करते हैं। जब गुरु साहब आए तो वे सब कहने लगे, ''महाराज जी! आपने तो पीछा छुड़वाने की खातिर भाई बेला को यह तुक बताई थी।''

वाह भाई बेला न पछाणे वक्त ते न पछाणे वेला।

लेकिन भाई बेला इसी तुक को रटता जा रहा है। गुरु साहब ने भाई बेला को अपने पास बुलाया। उसकी आँखों में आँखें डाल दी उसकी सुरत चढ़ा दी और कहा, ''हाँ भाई! जिन्होंने वेला-वक्त नहीं विचारा उन्होंने ही परमात्मा को पाया है।''

बाकी प्रेमियों ने जब भाई बेला की सुरत चौबीस घंटे चढ़ी देखी। उसकी प्रेम भरी बातें सुनी। वह बताता था कि गुरु क्या चीज़ है, गुरु अंदर के मण्डलों पर आत्मा के लिए क्या करता है तो दूसरे प्रेमी अपनी कमियाँ देखने की बजाए गुरु साहब पर अभाव ले आए और गुरु साहब से कहने लगे कि इस दरबार में इंसाफ नहीं है। किसी ने कहा मुझे चालीस साल हो गए हैं। किसी ने कहा मुझे तीस साल हो गए हैं। किसी ने कहा कि हम गुरु नानकदेव जी के सिक्ख हैं हमारे साथ बेइंसाफी क्यों है? भाई बेला कल आया है और इसकी सुरत अंदर के मण्डलों का रस ले रही है।

गुरु साहब ने कहा कि हाँ भाई! आपके सवाल का जवाब देते हैं। गुरु साहब ने भांग मँगवाकर कहा कि इसे अच्छी तरह रगड़ो क्योंकि ज्यादा रगड़ने से नशा अच्छा आता है। गुरु साहब ने कुछ प्रेमियों से कहा, ''इसे पी लो लेकिन जो इसे गले से नीचे उतारेगा उसे सिक्खी से खारिज़ किया जाएगा। कुछ प्रेमियों को गले से नीचे उतारने के लिए कह दिया फिर दोनों को बुलाकर पूछा कि क्या तुम्हें कोई नशा आया?'' जो गले से नीचे नहीं लेकर गए थे वे

कहने लगे अगर हम पीते तो ही हमें नशा आता। जब दूसरों से पूछा तो उन्होंने कहा कि धरती रंग-बिरंगी नजर आ रही है, दुनिया की होश भूली हुई है। गुरु साहब ने कहा यही तुम्हारे सवाल का जवाब है। तुम सतसंग सुनते हो बानी भी पढ़ते हो लेकिन एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हो उस पर अमल नहीं करते। तुम्हारे अंदर प्यार तो है लेकिन जब मन तुम्हारे ऊपर हमला करता है तुम्हें इन्द्रियों के भोगों में फँसाता है तो तुम उस जानी दुश्मन के आगे हार मान जाते हो।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कई बार हम अपना ऐब खुद ही ब्यान कर देते हैं।'' जब हम अभ्यास करते हैं तो मन हमारे अंदर जल्दबाजी पैदा करता है कि मुझे अभ्यास करते हुए इतने साल हो गए हैं लेकिन हम यह नहीं सोचते कि हम कितनी देर मन के गुलाम बने रहे, हमारे अंदर कितनी कमजोरियाँ थी? या हमने गुरु का कितना हुक्म माना?

गुरु नहीं चाहता कि मेरे सेवक मेरे जाने के बाद मन के गुलाम बने रहें या मेरे जीते-जी यह इन्तजार करें कि हमारी सुरत कब ऊपर के मण्डलो को पार करेगी? यह हमारे ऊपर ही निर्भर है जैसे एक पायलट हवाई जहाज को समय पर उड़ाकर ले जाता है इसी तरह गुरु भी चाहता है कि मेरे जीवन काल में ही मेरे बच्चे अपना कारोबार ठीक कर लें और भरपूर हो जाएं।

प्यारेयो! सन्त-सतगुरु हमसे इसलिए अभ्यास करवाते हैं ताकि हममें महारत पैदा हो जाए। वे पवित्र जीवन पर बहुत जोर देते हैं। अगली दुनिया इससे भी खूबसूरत है। हमारी आत्मा ने वहाँ से पार करना है अगर हम इस दुनियां में विषय-विकारों में लिपटे हुए हैं अभ्यासी जीवन नहीं बिताते तो आगे जाकर कैसे कायम रह सकेंगे?

महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंगों में जिक्र किया करते थे कि आप एक बार कालूदी वाड़ पहाड़ों पर गए। आपने वहाँ नामदान का कार्यक्रम किया। वहाँ कई प्रेमी आत्माओं की सुरत लगी और सबको अच्छे अनुभव हुए।

इसी तरह मैं पिछले साल जुलाई में बैंगलोर गया। वहाँ तकरीबन सवा सौ आदमी 'नामदान' में बैठे। वहाँ कोई ऐसा आदमी नहीं था जिसने इकबाल न किया हो कि हमें प्रकाश नजर नहीं आ रहा या आवाज नहीं सुनाई दी लेकिन जब मुंबई में 'नामदान' हुआ तो उस समय काफी प्रेमी थे। थ्योरी समझाने वाला भी वही आदमी था, सुरत को ऊपर खींचने वाला भी वही गुरु था लेकिन एक-दो आदमियों ने ही हाथ ऊपर किया बाकी सारे खामोश रहे। किसी को अनुभव नहीं हुआ, उन्हें दोबारा बैठक देनी पड़ी।

प्यारेयो! गुरु वही, नाम वही अब हम खुद ही फैसला कर सकते हैं कि बैंगलोर में सबको अच्छे से अच्छा अनुभव हुआ और मुंबई में क्यों नहीं हुआ? यह हमारे प्रेम या तड़प पर निर्भर है या हमारे कर्मों पर निर्भर है कि हमारी आत्मा पर कितना बोझ है, हमारे बुरे कर्मों की मैल हमारी आत्मा पर कितनी चढ़ी हुई है।

मैंने अपनी जिंदगी में दो बार अभ्यास करवाया है। एक बार का अभ्यास तो बहुत सख्त था। जिस तरह सिक्ख लोग अखंड पाठ करते हैं जो पहला आदमी पाठ पढ़ रहा होता है जब दूसरा आदमी उसके साथ बोलने लग जाए वह फिर ही छोड़ता है। इसी तरह हमने सब सतसंगियो के तीन भाग कर लिए, तीन डिटेल बना ली। जब दूसरी डिटेल सिमरन पर बैठ जाती तो ही पहली डिटेल उठती थी। एक आदमी पहरे पर होता था अगर कोई आदमी आलस करके सिर को नीचे करता तो उसे थप्पड़ पड़ता था। ऐसा नहीं कि

मैं उन्हें बिठाकर खुद ऊपर चला जाता था। जब मेरी टर्न आती तो मैं भी उसी तरह पहरा देता था। चार घंटे बाद हमारी टर्न आ जाती थी। इस अभ्यास में गांव की भोली-भाली जनता भी थी जो यह सोचकर बैठे थे कि हमने नाम ही जपना है। उन्हें ज्यादा अनुभव हुए, उन्होंने ज्यादा तरक्की की। पढ़े-लिखे शहरी लोग यही कुछ करते रहे कि चावल ठीक नहीं, कोई कहता चाय ठीक नहीं, कोई कहता बैठा नहीं जाता बस उनके पल्ले यही कुछ था।

इसी महीने में नौं तारीख से सोलह तारीख तक काफी प्रेमी अभ्यास के प्रोग्राम में शामिल हुए। यह प्रोग्राम काफी कामयाब रहा। इस प्रोग्राम में भी मुझे गांव की जनता ने ही ज्यादा से ज्यादा तजुर्बे बताए। शहरी जनता का यही ख्याल रहा। एक दिन सुबह खीर बनाई और शाम को प्रसाद बना। एक प्रेमी ने मेरे पास आकर कहा, ''मुझे आपके प्रसाद से गर्मी हो गई और खीर से वाई हो गई है।'' मैंने कहा, ''अब मैं क्या करूँ? अगर मैं कुछ नहीं करता तो अंदर से हुजूर नाराज होते हैं कि तू संगत की सेवा नहीं करता। लेकिन संगत खीर पर भी नाराज और प्रसाद पर भी नाराज होती है। आप सोचकर देखें! ऐसे लोग कैसे तरक्की कर सकते हैं?''

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर साधु की संगत में जाकर हमें खुष्क रोटी भी खानी पड़ जाए तो यही समझना चाहिए कि हमारे कर्मों में ऐसा ही लिखा है और यह बहुत उत्तम प्रसाद है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग ज्यादा पढ़-लिख जाते हैं उनका दिमाग ज्यादा घूमने लग जाता है। वे लोग यही सोचते रहते हैं कि इस किताब में यह लिखा है, उस किताब में वह लिखा है और वे अभ्यास के चोर बन जाते हैं।''

एक बार कबीर साहब के पास तीन आदमी आए जिनमें एक पढ़ा-लिखा, एक अनपढ़ और एक योगी था। उन्होंने अपने-अपने सवाल किए और कबीर साहब ने उन्हें प्यार से जवाब दिया। अनपढ़ ने कहा, ''पढ़ना नहीं चाहिए जिस तरह स्याही काली होती है उसी तरह पढ़कर इंसान का दिल भी काला हो जाता है, बिल्कुल किसी भी किताब को नहीं उठाना चाहिए।'' कबीर साहब चुप रहे फिर उन्होंने पढ़े-लिखे की तरफ इशारा किया कि तेरा क्या सवाल है? उसने कहा, ''अनपढ़ की भी कोई जिंदगी है। अनपढ़ को तो जीने का ढंग ही नहीं आता, अनपढ़ आदमी तो जानवर जैसा होता है।'' योगी से पूछा कि तेरा क्या सवाल है? योगी ने कहा,''योग करना चाहिए, न्योली आसन करने ठीक हैं।'' कबीर साहब ने प्यार से जवाब दियाः

मैं जाणया पढ़बो भला, पढ़बो से भल योग।
भक्त न निन्दो राम की, ते भावे निन्दे लोग।

आप कहते हैं, ''मैंने समझा पढ़ा-लिखा अच्छा होगा यह तो अनपढ़ की निन्दा कर रहा है और अनपढ़ पढ़े-लिखे की निन्दा कर रहा है लेकिन योगी तो हर किसी की निन्दा करने में लगा हुआ है।'' इसलिए हमें कोई ऐसा रास्ता निकालना चाहिए चाहे कोई हमारी निन्दा करे, गुरु ने हमें जो भक्ति बताई है रात-दिन हमें उस भक्ति में लगे रहना चाहिए।

जो सतसंगी यह आशा रखकर भक्ति करते हैं कि हमने भक्ति करनी है वे इस तरह नहीं सोचते कि कौन-सा मण्डल कब पार होगा? मैं वायदे से कहता हूँ कि वे जल्दी कामयाब हो जाते हैं। जो प्रेमी यही सोचते रहते हैं कि कब पार होंगे, कितने समय में पार होंगे? वे गिनतियाँ-मिनतियाँ ही करते रह जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी पढ़े-लिखों की एक बहुत हँसने वाली बात बताया करते थे। एक बनियो का परिवार था, वे सब पढ़े-लिखे थे। वे सब कहीं दूर जा रहे थे। उस समय हिन्दुस्तान में आज की तरह नदियों पर पुल नहीं थे और बसें वगैरहा भी नहीं थी। रास्ते में नदी आई, नदी को पार करने के लिए घाट बना हुआ था। एक पढ़े-लिखे ने आगे जाकर पानी की गहराई नापी कि नदी में बीस फुट गहरा पानी है और हम बीस आदमी हैं; सबके हिस्से में एक-एक फुट पानी आएगा। उसने यह नहीं सोचा कि हर किसी को अकेले ही बीस फुट पानी का भुगतान करना पड़ेगा।

जो भी पहले पानी में गया वह डूब गया। पढ़े-लिखे ने हिसाब लगाया कि हिसाब तो सही है फिर ये सब डूब क्यों रहे हैं? वहाँ एक अनुभवी आदमी आया उसने कहा, ''तू सारे परिवार को क्यों डुबो रहा है?'' पढ़े-लिखे ने कहा कि मेरा हिसाब तो ठीक है कि पानी बीस फुट है और हम भी बीस आदमी है, सबके हिस्से एक-एक फुट पानी आ रहा है। अनुभवी आदमी ने कहा, ''पानी की गहराई सबको बीस फुट ही आएगी। नदी को पार करने के लिए तुम किसी बेड़ी वाले का सहारा लो।''

हमें नाम की कमाई करनी चाहिए अनुभव प्राप्त करना चाहिए। मैंने अपने गुरुदेव का हुक्म माना। मेरे ऊँचे भाग्य थे कि मैं आपका हुक्म मान सका। जानी दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है उसने अनेकों को ही डुबो दिया है।

मैं इस मत में कुछ करने के लिए दाखिल हुआ था। मुझे मेरे गुरु ने जो कहा मैंने वह किया। शुरु-शुरु में जब पश्चिम के प्रेमी आए तो मेरे आगे यही समस्या खड़ी होती थी कोई प्रेमी कहता मेरे गिट्टे दुखते हैं, गोड्डे दुखते हैं। कोई प्रेमी कहता कि मेरा ख्याल

नहीं टिकता या मेरा कुछ नहीं बना। मैं यही सोचता कि इन्हें गुरु मिला है फिर भी ये ऐसा क्यों कहते हैं? अगर गोड्डे, गिट्टे दुखते हैं तो दुखने दो अभ्यास मत छोड़ो।

एक बार परमात्मा कृपाल करणपुर आए। एक आदमी ने महाराज जी से कहा कि महाराज जी! पहले मुझे ज्योत दिखाई देती थी अब दिखाई नहीं देती। महाराज जी ने उसे अभ्यास पर बिठाया फिर भी उसे अनुभव न हुआ। उस समय मैं पास ही खड़ा था। आपको पता है कि जो गुरु को भगवान समझता है उसके दिल पर क्या बीतती है? उस समय मेरे दिमाग पर बहुत बोझ पड़ा कि यह आदमी वक्त क्यों खराब कर रहा है, यह गुरु को मत्था क्यों नहीं टेक लेता? ज्योत इससे अलग तो नहीं यह ज्योत रूप ही है। वह प्रेमी अब भी सतसंग में आता है, उस समय को याद करता है कि मैंने कितनी गलती की उस समय भगवान मेरी आँखों के सामने था और मैं अंदर ही कोशिश करता रहा। ***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

विरोध

मीरां बाई की बानी

पोटर वेली, केलीफोर्निया

मीरा मन मानी सुरत सैल असमानी।।

यह मीरां बाई की बानी है। जितने भी सन्त हुए है सबकी एक ही कहानी एक ही संदेश है। भजन-अभ्यास करने के लिए चाहे स्त्री हो चाहे पुरुष हो, चाहे किसी भी देश का रहने वाला हो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। भजन-अभ्यास करने वालों में लग्न होती है। सन्तमत में बहुत सी स्त्रियों ने भजन-सिमरन और भक्ति की है।

मुसलमानों में राबिया बसरी बहुत भक्ति वाली स्त्री हुई है। भारत में महात्मा गार्गी बड़ी कमाई वाली स्त्री हुई हैं, आप कपड़े नहीं पहनती थी। लोगों को बहुत शिकायत थी कि आप नंगी रहती हैं लेकिन आप कहा करती थी, ''मेरे भक्तों को मेरे नंगे रहने से कोई फर्क नहीं पड़ता। जिनमे परमात्मा का प्यार नहीं है उनको ही मेरा नंगापन दिखाई देता है।'' जो लोग **विरोध** करते हैं कि स्त्री भक्ति नहीं कर सकती या स्त्री सचखण्ड नहीं पहुँच सकती है असल में वे सन्तमत को नहीं समझ सकते।

सन्त जो नाम आदमियों को देते हैं वही नाम औरतों को भी देते हैं। आदमी और औरत में कोई फर्क नहीं होता, दोनों के लिए एक ही नाम होता है। मेरा जातिय तजुर्बा है कि जब आत्माएं स्थूल, सूक्ष्म और कारण पर्दे उतारकर चढ़ाई करके सचखण्ड पहुँचती हैं तब सब आत्माएं नंगी होती हैं। आत्माएं न काली, न गोरी न औरत न मर्द होती हैं। औरत-मर्द का भेद ब्रह्म तक ही है। आदमी और औरत में एक ही ताकत काम करती है।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''चाहे राजा है चाहे रंक है! सब एक ही तरीके से पैदा होते हैं। आप किसको बुरा कहेंगे?'' सहजो बाई और दया बाई भारत की महिला सन्त हुई हैं। जब आप इनकी लेखनियों को पढ़ेंगे तो आपको वही हिदायतें मिलेंगी जो महाराज सावन और महाराज कृपाल की लेखनियों में हैं।

मीरां बाई का जन्म राजस्थान के एक राजघराने में हुआ। आपकी घरेलू जिंदगी सुखों से भरी हुई थी। आप बचपन से ही परमात्मा की भक्ति किया करती थी। जब आपके पति का देहान्त हो गया तो यह भक्ति और बढ़ गई। हम जानते हैं कि दुनियावी लोगों को परमात्मा की भक्ति अच्छी नहीं लगती। यह कुदरती बात है कि जब मीरां बाई ने परमात्मा की भक्ति शुरू की तो आपके पति के भाई ने आपकी भक्ति का बहुत **विरोध** किया।

हुजूर कृपाल कहा करते थे, ''अगर बुरा आदमी बुराई नहीं छोड़ता तो भला आदमी भलाई क्यों छोड़े? जब भले आदमियों का **विरोध** होता है तो वे और अधिक मजबूत हो जाते हैं।''

मीरां बाई परमात्मा की खोज में हिन्दुस्तान भर में फिरती रहीं। आप हिन्दुओं के सभी तीर्थों पर गई लेकिन कोई भी आपको 'सुरत-शब्द' के साथ से नहीं जोड़ सका। उस समय काशी में बहुत पुजारी और पंडित थे। आप परमात्मा की खोज में काशी भी गई लेकिन आपको काशी के मंदिर के पुजारियों से संतुष्टि नहीं मिली।

आपको महात्मा रविदास का एक सेवक मिला उसने आपको बताया कि रविदास आपकी मदद कर सकते हैं, शब्द-नाम के साथ जोड़ सकते हैं। जब आपने रविदास से नाम लिया तो मंदिर के पुजारियों को बुरा लगा कि यह अच्छी ग्राहक थी; हम इससे अच्छा धन प्राप्त कर सकते थे लेकिन अब हमें इससे धन नहीं मिलेगा।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''निन्दा करने वालों का निन्दा करने के पीछे कोई न कोई स्वार्थ होता है।'' जब मीरां बाई ने रविदास से नामदान लिया तो सब पंडित इकट्ठे होकर राजस्थान गए और उन्होंने झंझट खड़ा कर दिया। पंडितों ने मीरां बाई के पति के भाई को बताया कि मीरां बाई बहुत खराब है यह राजघराने के लिए कलंक है। मीरां बाई को रविदास के पास जाने से रोकना चाहिए क्योंकि रविदास एक नीची जाति का मोची है। उस समय हिन्दुस्तान में जाति प्रथा जोरों पर थी। आप जब घर लौटी तो आपके पति के भाई जोकि उस समय राजा था, उसने मीरां बाई का बहुत विरोध किया और वह आखिर तक **विरोध** करता रहा।

एक बार मीरां बाई ने अपने गुरु रविदास को अपने घर में चरण डालने के लिए विनती की। जब महात्मा रविदास चितौड़ (राजस्थान) आए तो मीरां बाई ने अपने गुरु के आने पर बहुत बड़ा भंडारा किया और पंडितों को भी खाने पर बुलाया गया। पंडितों ने **विरोध** किया कि वे उसके घर में खाना नहीं खाएंगे क्योंकि मीरां बाई ने एक छोटी जाति के आदमी को अपने घर में बुलाया है। पंडितों के मन में यह भी डर था कि हम अच्छे खाने से वंचित रह जाएंगे लेकिन पंडितों ने कहा कि हम एक ही शर्त पर आएंगे कि रविदास हमारे साथ बैठकर भोजन नहीं करेगा।

सन्त समझदार होते हैं और वे सदा ही अपने भक्तों की लाज रखते हैं। गुरु रविदास ने मीरां बाई से कहा, ''बेटी! तुम पंडितों को खाना खिलाकर खुश करो, मैं तो तुमसे पहले ही खुश हूँ। मैं पंगत से अलग बैठकर खाना खा लूंगा।'' जब पंडित भोजन कर रहे थे तो उस समय ऐसा चमत्कार हुआ हर पंडित को लगा कि रविदास उनके साथ बैठकर खाना खा रहे हैं। पंडितों ने शोर

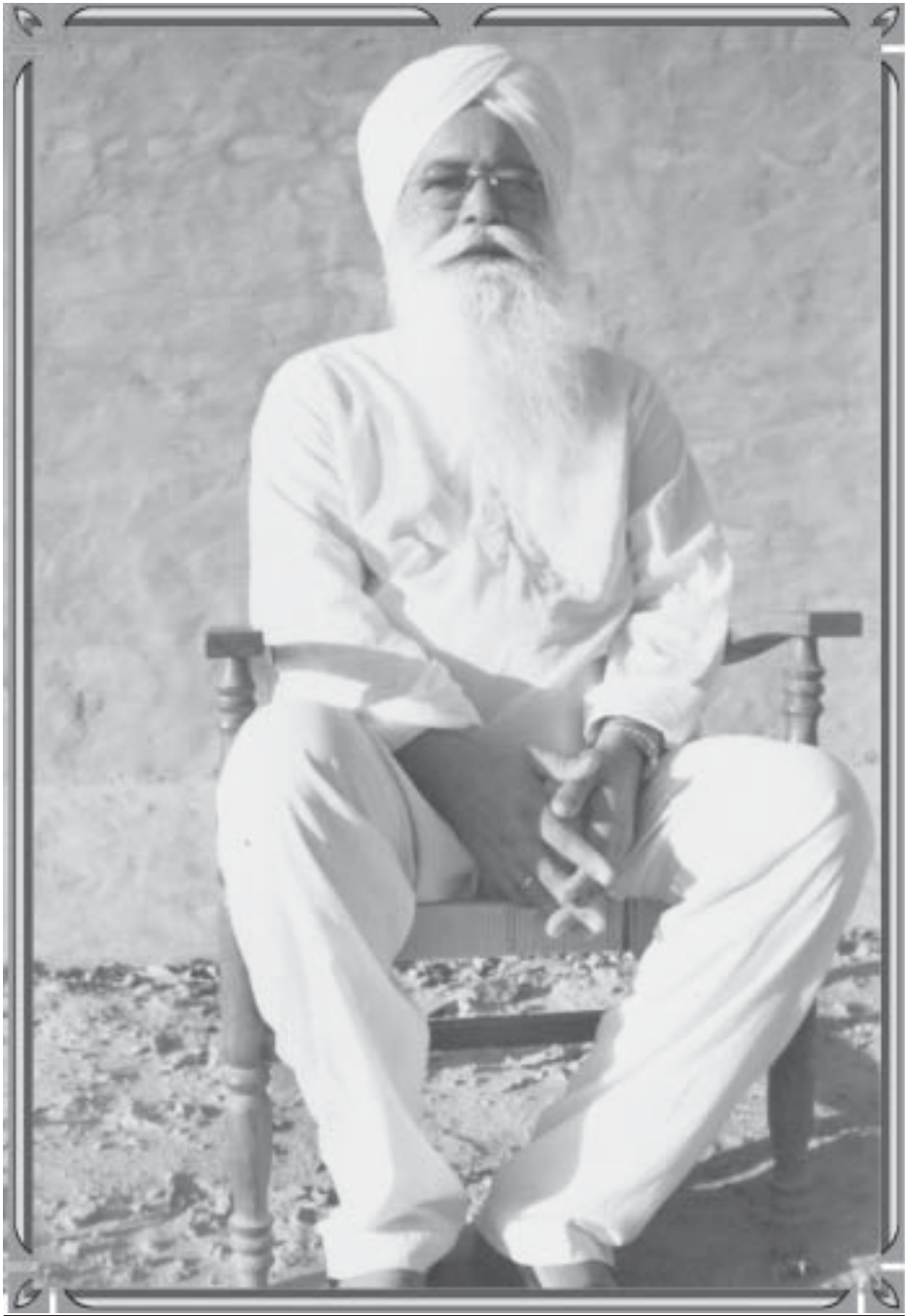

मचाना शुरू कर दिया, ''अंधेर! अंधेर! यहाँ इतने सारे रविदास कैसे आ गए?'' ऐसा होने पर पंडित बहुत शर्मिन्दा हुए लेकिन फिर भी उनके मन में रविदास के लिए नफरत थी।

मीरां बाई के पति के भाई राजा ने मीरां को समझाने के लिए बहुत सी औरतों को भेजा कि मीरां रविदास की संगत छोड़ दे। हम जानते हैं हम जैसी संगत करते हैं वैसे ही बन जाते हैं अगर हम सन्तों की संगत करते हैं तो हमारे अंदर सन्तों वाले गुण आ जाते हैं, हम भी उसी रंग में रंग जाते हैं। जिन औरतों को मीरां के पास भेजा गया वे मीरां की संगत में रहकर मीरां के ही गुणगान करने लगी लेकिन राजा सदा ही **विरोध** करता रहा।

राजा को अपनी बहन पर बहुत भरोसा था इसलिए उसने अपनी बहन को मीरां के साथ रहने की सलाह दी कि वह मीरां का मन बदलने की कोशिश करे। जब राजा की बहन मीरां के साथ रही तो मीरां को बदलने की बजाय उसकी बहन ही बदल गई। तब उसने राजा से कहा, ''मीरां एक महान औरत है तुम्हें अपना विचार बदल लेना चाहिए मीरां जो कर रही है वह ठीक है।''

सन्त चाहे किसी भी रूप में आए हों उनका सदा ही **विरोध** होता आया है। मीरां को मारने के अनेक उपाय किए गए। उसे मारने के लिए माता-पिता ने जहर का प्याला भेजकर कहा कि यह अमृत का प्याला है तुम इसे पी लो। मीरां बाई की भाभी जानती थी कि यह जहर का प्याला है उसने मीरां को बताया कि इसमें जहर है वह इसे न पिए। मीरां ने कहा, ''मुझे यह अमृत कहकर भेजा गया है मैं इसे पीऊंगी।'' मीरां ने उस प्याले को पी लिया।

जब मीरां जहर का प्याला पीने से नहीं मरी तब उसके माता-पिता ने एक पिटारी में नाग भेजा और बताया कि इसमें फूलों का

हार है। मीरां की सहेलियों ने बताया इसमें फूलों का हार नहीं बल्कि नाग है। जब मीरां ने पिटारी खोली तो उसे पिटारी में अपना गुरु दिखाई दिया। मीरां ने उस फूलों के हार को पहन लिया उसे कुछ भी नहीं हुआ।

मीरां बाई बड़ी कमाई वाली अभ्यासी महिला थी। उसे अपने गुरु पर पूरा भरोसा था। किसी ने ताना मारकर कहा कि तुम एक राजकुमारी हो महलों में रहती हो लेकिन तुम्हारा गुरु एक कुटिया में रहता है जूते गाँठकर अपना गुजारा करता है। हम जानते हैं कि सेवक अपने ऊपर ताने-मेहणे सहन कर लेता है अगर कोई उसके गुरु के लिए कुछ कहता है तो सेवक सुन नहीं पाता।

मीरां एक कीमती हीरा लेकर रविदास जी की कुटिया में गई। मीरां ने रविदास जी से कहा, ''आप कृपया करके इस हीरे को स्वीकार करें, इस हीरे को बेचकर अच्छा सा मकान बनवाएं और अपने लिए कुछ अच्छी चीज़ें ले लें।'' रविदास ने मीरां से कहा, ''बेटी! मुझे आरामदायक जीवन बिताने के लिए महलों की जरूरत नहीं। ये महल और सभी चीज़े यहीं रह जाएंगी। मैं इस छोटी सी कुटिया में बहुत खुश हूँ अगर लोग तुम्हारा **विरोध** करते हैं तो तुम महल में रहकर ही भजन-अभ्यास करो।''

मीरां ने हीरे को कुटिया के सुराख में रखकर रविदास जी से कहा कि मैंने हीरा यहाँ रख दिया है। जब मीरां तीन साल के बाद रविदास जी के पास गई तब वहाँ वही कुटिया थी। बहुत से राजा-महाराजा और धनी लोग रविदास जी के सेवक थे लेकिन रविदास जी ने अपनी रोजी-रोटी जूते गाँठकर कमाई।

उस समय एक राजा पीपा था, उसे परमात्मा की भक्ति का शौक था। उसने अपने अहलकारो से पूछा क्या अपने इलाके में

कोई पूर्ण सन्त है जो मुझे परमात्मा से मिलाने में मदद कर सके? अहलकारों ने बताया, ''हाँ! काशी में एक सन्त हैं लेकिन वह छोटी जाति से हैं उनका नाम रविदास है।''

उस समय काशी में पर्व लगा हुआ था। राजा ने सोचा! इस समय लोग पर्व में गए हुए हैं। लोकलाज से डरता हुआ राजा सन्त रविदास के पास पहुँचा। उस समय रविदास जी चमड़े की मश्क में से पानी निकाल रहे थे। जब रविदास जी ने देखा कि एक राजा आपके घर आया है तो आपने उसे बख्शने की सोची। सन्त हमेशा दयावान होते हैं। आपने चमड़े की मश्क में से पानी लेकर राजा से कहा कि हाथ कर, वह पानी अमृत था। मन हमेशा ही धोखा देता है। राजा ने सोचा अगर मैं यह पानी पी लूंगा तो मैं भी नीच जाति का हो जाऊंगा। राजा ने रविदास के हाथ का पानी पीने की बजाय उस पानी को कुर्ते की बाजू में से बह जाने दिया। सन्त जो भी करते हैं उसके पीछे कोई न कोई कारण होता है।

राजा ने महल में वापिस आकर धोबी को बुलाकर कहा, ''इस कुर्ते को खड़े पानी में धोकर लाओ।'' धोबी वह कुर्ता लेकर अपने घर चला गया। धोबी भट्टी तैयार करने लगा और उसने अपनी लड़की से कहा कि जल्दी से कुर्ते के ऊपर लगे धब्बों को चूसकर मिटा दे। धोबी लोग धब्बे को चूसकर थूक बाहर फैंक देते हैं लेकिन लड़की नाबालिग थी उसने धब्बों को चूसकर थूक बाहर फैंकने की बजाय अंदर निगल लिया। राजा के कुर्ते में पानी के धब्बे एक तरह का प्रसाद था। जैसे-जैसे लड़की थूक अंदर निगलती गई उसके अंदर के पर्दे खुलने शुरू हो गए, उसे अनुभव होने लगे। वह थोड़े ही समय में ज्ञान-ध्यान की बातें करने वाली परमात्मा की भक्त बन गई; चारों और उसकी प्रसिद्धि फैल गई।

राजा पीपा को पता चला कि धोबियों के घर में एक छोटी सी लड़की बहुत पहुँची हुई है, ज्ञान-ध्यान की बातें करती है। राजा पीपा के दिल में परमात्मा से मिलने का शौक था, उसने सोचा कि उस लड़की के पास जाकर आर्शिवाद लेना चाहिए। वह यह सोच रहा था कि मुझे एक धोबी के घर जाना चाहिए या नहीं क्योंकि मैं एक राजा हूँ आखिर वह रात के समय धोबी के घर गया।

राजा को आता हुआ देखकर लड़की उसके सम्मान में खड़ी हो गई। राजा ने कहा, ''बेटी! मैं एक राजा बनकर तुम्हारे घर नहीं आया मैं तो तुमसे रूहानियत का ज्ञान लेने आया हूं।'' धोबी की लड़की ने कहा, ''मैं भी आपको राजा समझकर खड़ी नहीं हुई मैं इसलिए खड़ी हुई हूँ कि मुझे जो राज हकीकत मिला है वह आपके कुर्ते में से ही मिला है।''

जब राजा पीपा को पता लगा कि ओह! लोकलाज की वजह से मैंने कितनी बड़ी गलती की है तो वह भागकर रविदास जी के पास गया कि आप मुझ पर दया करें। रविदास जी ने कहा, ''उस समय तो मालिक की मौज थी तुम बिना कमाई ही परमात्मा को प्राप्त कर लेते लेकिन अब तुम्हें कमाई करनी पड़ेगी।'' रविदास जी ने राजा पीपा को 'नामदान' दिया और कहा, ''अब तुम्हें भजन-अभ्यास करना पड़ेगा, मेहनत करनी पड़ेगी। तुम्हारे अंदर के सारे पर्दे खुल जाएंगे, तुम्हें परमात्मा की प्राप्ति होगी।'' उसके बाद राजा पीपा ने बहुत कमाई की और परमगति को प्राप्त किया। राजा पीपा की बानी गुरुग्रन्थ साहब में दर्ज है।

मीरां बाई को बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। मीरां बाई की बानी को समझना बहुत मुश्किल है। जो लोग पहुँचे हुए नहीं थे उन्होंने उनकी बानी में बहुत कुछ जोड़ दिया। आपने

भजन-अभ्यास में कड़ी मेहनत की। आम लोग ऐसा कठोर भजन-अभ्यास नहीं कर सकते जैसा कि मीरां बाई ने किया और परमात्मा को पाया। मीरां बाई कहती हैं कि जब आपने अपनी आत्मा को मन और इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठाया, ब्रह्म को पार किया आप सचखण्ड पहुँच गई, आपने सतलोक के सुखों का आनन्द उठाया।

जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी।

मीरां बाई कहती हैं, ''जब आत्मा मन और इन्द्रियों से ऊपर उठ जाती है तब आँखों में नीर भर आता है। आत्मा को ऐसी खुशी और प्यार बाहर के संसार से नहीं मिला होता जोकि अंदर मिलता है। अंदर के पर्दे खुल जाते हैं और मन काबू में आ जाता है। जब प्रकाश जगमगा उठता है, गुरु का स्वरूप प्रकट हो जाता है तब प्रेमी अंदर के खूबसूरत नजारों को नहीं छोड़ना चाहता फिर मन भी बाहर की दुनिया में नहीं आना चाहता।''

मुसलमान लोग जब हज करने के लिए मक्का जाते हैं तो मक्का की मस्जिद में चक्कर लगाकर सोचते हैं कि उनकी भक्ति पूर्ण हो गई है, हज हो गया लेकिन परमात्मा के प्रेमी गुरु के स्वरूप तक पहुँचकर सोचते हैं कि उनका हज हो गया।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''मैं सदा अपने गुरु के दर्शन करना चाहता हूँ। जब गुरु के दर्शन करता रहता हूँ तो खुश रहता हूँ। जब गुरु के दर्शन नहीं होते तो मैं इधर-उधर भटकता रहता हूँ, मैं फिर आँखें बंद करके अंदर गुरु के स्वरूप के दर्शन करता हूँ।''

मुसलमानों में राबिया बसरी एक सन्त हुई हैं। किसी ने राबिया बसरी से पूछा, ''आप जब भक्ति करती हैं तो परमात्मा पहले आता है या परमात्मा आपकी भक्ति के बाद आता है?''

राबिया बसरी ने कहा, ''पहले परमात्मा आता है मैं उसके बाद भक्ति करती हूँ। जब मेरी आँखें आसुँओं से भर जाती हैं तब मेरे मन में परमात्मा की तड़प जाग उठती है तो मैं जान जाती हूँ कि परमात्मा आ गया है।'' कबीर साहब कहते हैंः

जब तू आवें आँख में, आँख झांप मैं लूं।
न मैं देखूं और को, न तुझे देखन दूं।।

परमात्मा! तू मेरी आँखों में आ जाए तो मैं आँखें बंद कर लूं फिर न मैं किसी को देंखू और न ही तुझे किसी और को देखने दूं।

ज्यों हिये पीर तीर सम सालत, कसक कसक कसकानी।

हम जब तक अंदर नहीं जाते तब तक ही सांसारिक सुखों के पीछे भागते हैं अगर हम जरा सा भी अंदर जाने लग जाएं तो हमारा ध्यान सांसारिक सुखों से दूर हट जाएगा।

मैंने आपको कल सतसंग में बताया था कि जब आत्मा हृदय चक्र से ऊपर उठती है तो बहुत दर्द होता है यह दर्द बर्दाशत नहीं होता लेकिन मैंने यह भी कहा था कि परमात्मा को पाने के लिए प्रेमी को बहुत दर्द सहना पड़ता है। मैंने पुराने जमाने का उदाहरण दिया था कि जब राजा अपराधियों को सजा देते थे तो अपराधियों के हाथ-पैर बंधवाकर उन्हें काटने के लिए कुत्ते छोड़ देते थे। कुत्ते अपराधियों की खाल उधेड़ देते और भाग जाते फिर दूसरे कुत्ते उन अपराधियों को खाने के लिए आ जाते थे। उसी तरह भजन में इस प्रकार का दर्द महसूस होता है।

मीरां बाई कहती हैं, ''मेरे हृदय में वियोग का इतना दर्द है जैसे किसी ने मेरे दिल पर तीर चला दिया हो। तीर निकल नहीं रहा, मेरे दिल को घायल कर रहा है।''

गुरु नानकदेव जी की माता ने पूछा, ''बेटा! नाम जपना कैसा है?'' गुरु नानकदेव ने कहा, ''नाम जपना आसान नहीं यह बहुत दर्दभरा है, मन के साथ कुश्ती करना आसान नहीं।'' जो लोग यह समझते हैं कि आसानी से किसी भी काम में कामयाब हो जाएंगे वे बड़ी भूल में हैं। किसी भी काम को करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। दर्द सहन किए बिना माँ भी बच्चे को जन्म नहीं दे सकती।

रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावे अन्न न पानी।।

मीरां बाई कहती है, ''मुझे रात को नींद नहीं आती और दिन में बैचेन रहती हूँ, मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता।'' परमात्मा के प्रेमी उसके बिना सुखी नहीं रहते।

ससी और पुन्नु की कहानी है, वे दोनों एक-दूसरे से प्यार करते थे। फकीर हसन शाह, ससी और पुन्नु के बारे में बताते हैं कि ससी के पैर बहुत कोमल थे। वह रेगिस्तान की गर्म रेत पर नंगे पैर अपने प्रेमी पुन्नु से मिलने गई तो उसके पैरों में छाले पड़ गए लेकिन उसने परवाह नहीं की और गर्म रेत पर चलती रही। ऐसे प्रेमियों का प्यार सच्चा होता है। दुनियावी प्रेमी अपने प्यार के लिए इतनी तकलीफ झेलते हैं तो परमात्मा के प्रेमियों का प्यार तो बहुत गहरा होता है। कबीर साहब कहते हैंः

सुखिया सब संसार है खाए और सोए, दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।।

फरीद साहब परमात्मा की भक्ति किया करते थे। आपने सोचा कि सिर्फ आप ही वियोग की आग में दुखी हो रहे हैं लेकिन जब आप ऊपरी मंडलों में सचखण्ड पहुँचे तो आपने देखा कि जो आत्माएं वहाँ पहुँची हैं उन सबकी यही कहानी थी। उन्हें भी दुःखों से गुजरना पड़ा जिन दुःखों से आप गुजरे थे।

ऐसी पीर बिरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी।।

मीरां बाई कहती है, ''इस वियोग का दुःख इतना भारी है कि मैं रात को सो नहीं पाती। मैं उठकर चारपाई पर बैठ जाती हूँ फिर सो नहीं सकती।'' हजरत बाहु कहते हैंः

राती रत्ती नींद न आवे, देहा बहुत हैरानी हू।

ऐसा वैद मिलै कोई भेदी, देस बिदेस पिछानी।।

मीरां बाई कहती हैं, ''हमारी आत्मा बीमार है। सन्त यहाँ वैद्य बनकर आते हैं वे नाम की दवा देते हैं। मैंने बहुत से स्थानों पर वैद्य को ढूंढने की कोशिश की जो मेरी बीमारी दूर कर सके।''

तासों पीर कहूं तन केरी, फिर नहिं भरमों खानी।

आप कहती हैं, ''मैं ऐसे वैद्य की तलाश में हूँ जो सचखण्ड से आया हो और मुझे सचखण्ड ले जा सके।''

खोजत फिरों भेद वा घर को, कोई न करत बखानी।।

आप कहती हैं, ''मैं जितने भी वैद्यों के पास गई हूँ वे पूरे नहीं अधूरे थे। किसी ने मुझे तप किसी ने धूनियां और किसी ने कई किस्म के रीति-रिवाज बताए। मुझे वे सब अधूरे लगे क्योंकि वे सचखण्ड नहीं ले जा सकते थे।''

रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दोनों सुरत सहदानी।।

अब आप कहती हैं, ''सब जगह खोजने के बाद आखिर मुझे सन्त रविदास मिले। सन्त रविदास ने मेरी आत्मा को 'सुरत-शब्द' के साथ जोड़ दिया और सचखण्ड ले गए।'' दुनिया के सभी धर्म भूल में हैं और यह उपदेश देते हैं कि आप उनसे मुक्ति पा लेंगे,

मरने के बाद सच्चे घर पहुँच जाएंगे लेकिन सन्त कहते हैं, ''अगर आप अनपढ़ हैं तो मरने के बाद बी.ए., एम.ए. कैसे हो जाएंगे?'' अगर हम इस जन्म में कामी और लालची हैं तो मरकर सन्त कैसे बन जाएंगे?

सन्त कहते हैं, ''जो कल करना है वह आज ही करें। क्या भरोसा है कि आप कल कुछ कर पाएंगे?'' योगीजन कुंडलिनी जागृत करने के लिए कहते हैं कि ऐसा करके आपको शांति मिल जाएगी लेकिन सन्त कहते हैं कि कुंडलिनी जागृत करने पर भी आपको शांति नहीं मिलेगी। मैंने खुद ऐसे योग-अभ्यास किए हैं लेकिन मेरी आत्मा ऊपर नहीं गई, मुझे शांति नहीं मिली।

ऐसे योग-अभ्यास करके हमारे अंदर कुछ शक्तियां आ जाती हैं। हम जब दूसरे लोगों को उन शक्तियों का प्रयोग करके दिखाते हैं तो लोग हमारी बड़ाई करने लग जाते हैं। मैं जब जवान था मैं भी ऐसे खेल किया करता था। जब कोई मेरे साथ आँख मिलाता तो मैं उसे फर्श पर गिरा देता। जब मैं बाबा बिशनदास जी से मिला तो उन्होंने मुझे ऐसे खेल करने के लिए मना किया।

मैं मिली जाय पाय पिया अपना, तब मोरी पीर बुझानी।।

अब मीरां बाई कहती है, ''रविदास जी ने मुझ पर दया की मुझे मेरे प्यारे परमात्मा से मिला दिया। अब मेरी प्यास बुझ गई है और मुझे शांति मिल गई हैं।''

मीरा खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी।।

मीरां बाई कहती है कि दुनियावी मान-सम्मान, अपमान, **विरोध** सब इस संसार में रह जाते हैं ये सतलोक में नहीं जाते हैं।

परमात्मा ने इंसानी जामा सबसे उत्तम बनाया है। आप किसी भी आदमी से पूछें क्या वह सुखी है? वह कहेगा कि मैं सुखी नहीं हूँ। हर किसी को कोई न कोई परेशानी रहती है। जब इंसान के जामें में कोई सुखी नहीं तो निचली योनियों- पशु, पक्षी, जानवर के लिए क्या उम्मीद कर सकते हैं? क्योंकि उनके पास तो कोई मौका ही नहीं है।

हमारा मन युगों-युगों से बाहर भटक रहा है। मन को काबू में करने के लिए जिंदगी भर जूझना पड़ता है। हमें सतगुरु पर भरोसा रखना चाहिए। आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए, 'शब्द-नाम' की कमाई करनी चाहिए।

***